

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 26, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

1. संगम साहित्य के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संगम कविता में अकम (akam) और पुरम (puram) के बीच का अंतर व्यापक रूप से क्रमशः आंतरिक/व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक/वीरतापूर्ण जीवन के क्षेत्रों से मेल खाता है।
2. तोल्काप्पियम (Tolkappiyam), हालांकि मुख्य रूप से व्याकरण और काव्यशास्त्र पर एक कृति है, संगम साहित्यिक परंपराओं के अंतर्निहित सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंडों पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) दोनों गलत हैं
- (d) न तो एक और न ही दो

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

दोनों कथन सही हैं।



- **कथन 1 सही है:** संगम कविता को पारंपरिक रूप से अकम और पुरम में वर्गीकृत किया गया है। अकम मुख्य रूप से मानवीय भावनाओं की आंतरिक दुनिया, विशेष रूप से प्रेम और संबंधों से संबंधित है, जबकि पुरम सार्वजनिक क्षेत्र से संबंधित है, जिसमें युद्ध, राजाश्रय, उदारता, वीरता और सामाजिक कार्य शामिल हैं। यह अंतर केवल "धार्मिक" और "धर्मनिरपेक्ष" कविता के बीच का नहीं है; यह अपने स्वयं के मानदंडों के साथ दो अलग-अलग काव्यात्मक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है।
- **कथन 2 सही है:** तोल्काप्पियम सबसे पुराना मौजूद तमिल व्याकरणिक कार्य है और काव्यशास्त्र, साहित्यिक परंपराओं और सामाजिक-सांस्कृतिक श्रेणियों के अपने वर्णन के लिए भी महत्वपूर्ण है। तिनै (tinai) पर इसकी चर्चा परिदृश्य, मानवीय गतिविधियों और काव्यात्मक विषयों के बीच संबंधों को समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

मुख्य जाल: तोल्काप्पियम को केवल एक व्याकरणिक पाठ मानना जिसका कोई ऐतिहासिक मूल्य नहीं है, एक बड़ा जाल है। यद्यपि यह एक पारंपरिक ऐतिहासिक क्रॉनिकल नहीं है, इसके व्याकरणिक और साहित्यिक नियम शुरुआती तमिल समाज और संस्कृति के पहलुओं के पुनर्निर्माण के लिए बहुमूल्य साक्ष्य प्रदान करते हैं।

2. बायोकेमिकल अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली (Biochemical Wastewater Treatment System) में, पानी के नमूने की बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (BOD) को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में समझा जाता है?

- (a) नमूना लेने के समय पानी में भौतिक रूप से मौजूद घुलनशील ऑक्सीजन की कुल मात्रा
- (b) निर्दिष्ट परिस्थितियों में जैविक रूप से अपघटनीय (biodegradable) कार्बनिक पदार्थों को जैविक रूप से विघटित करने के लिए सूक्ष्मजीवों द्वारा आवश्यक ऑक्सीजन की मात्रा
- (c) प्रकाश संश्लेषण के दौरान जलीय पौधों द्वारा विशेष रूप से उपभोग की जाने वाली ऑक्सीजन की मात्रा
- (d) अकार्बनिक प्रदूषकों को बेअसर करने के लिए पानी में रासायनिक रूप से जोड़ी गई ऑक्सीजन की मात्रा

उत्तर: (b)

व्याख्या:

BOD घुलनशील ऑक्सीजन की उस मात्रा को मापता है जो सूक्ष्मजीवों को एक निर्दिष्ट स्थिति के तहत पानी के नमूने में मौजूद बायोडिग्रेडेबल कार्बनिक पदार्थों को विघटित करने के लिए आवश्यक होती है, जिसे पारंपरिक रूप से एक परिभाषित ऊष्मायन अवधि (incubation period) के दौरान मापा जाता है।

एक उच्च BOD सामान्यतः बायोडिग्रेडेबल कार्बनिक पदार्थों के उच्च भार को दर्शाता है। जब अनुपचारित सीवेज या जैविक कचरा किसी जल निकाय में प्रवेश करता है, तो सूक्ष्मजीव कार्बनिक पदार्थ को विघटित करते हैं और घुलनशील ऑक्सीजन का उपभोग करते हैं। यदि ऑक्सीजन की खपत अत्यधिक हो जाती है, तो परिणामस्वरूप ऑक्सीजन की कमी जलीय जीवों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती है।

- (a) घुलनशील ऑक्सीजन (DO) का वर्णन करता है, BOD का नहीं।
- (c) गलत है क्योंकि प्रकाश संश्लेषण आम तौर पर BOD को परिभाषित करने के बजाय ऑक्सीजन का उत्पादन करता है।
- (d) BOD को एक रासायनिक उपचार प्रक्रिया के साथ भ्रमित करता है।

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims) के लिए एक महत्वपूर्ण अंतर BOD और COD के बीच है: BOD जैविक रूप से अपघटनीय (biodegradable) कार्बनिक पदार्थों से जुड़ा है, जबकि केमिकल ऑक्सीजन डिमांड (COD) ऑक्सीकरण योग्य पदार्थों के रासायनिक ऑक्सीकरण के लिए आवश्यक ऑक्सीजन समकक्ष को मापता है और सामान्यतः इसका दायरा व्यापक होता है।

3. भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. FDI में आम तौर पर किसी उद्यम में दीर्घकालिक हित और प्रबंधकीय नियंत्रण या प्रभाव की एक महत्वपूर्ण डिग्री शामिल होती है, जबकि FPI आम तौर पर समान स्तर के प्रबंधकीय नियंत्रण के बिना वित्तीय परिसंपत्तियों में निवेश का प्रतिनिधित्व करता है।
2. किसी भारतीय कंपनी में इक्विटी हासिल करने वाला विदेशी निवेशक अनिवार्य रूप से FDI का निर्माण करता है, भले ही उसकी होल्डिंग का आकार या लागू नियामक वर्गीकरण कुछ भी हो।
3. FDI की तुलना में, पोर्टफोलियो प्रवाह सामान्यतः वैश्विक ब्याज दरों, जोखिम धारणाओं और वित्तीय-बाजार की स्थितियों में बदलाव के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** मौलिक अंतर निवेश की प्रकृति से संबंधित है। FDI में एक विदेशी निवेशक का दीर्घकालिक हित और आमतौर पर उद्यम पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव या नियंत्रण शामिल होता है। पोर्टफोलियो निवेश में सामान्यतः तुलनीय प्रबंधकीय नियंत्रण के बिना मुख्य रूप से निवेश रिटर्न के लिए वित्तीय प्रतिभूतियों का अधिग्रहण शामिल होता है।
- **कथन 2 गलत है:** इक्विटी का विदेशी अधिग्रहण स्वचालित रूप से केवल इसलिए FDI नहीं बन जाता क्योंकि इक्विटी का अधिग्रहण किया गया है। लागू नियामक ढांचा और निर्धारित सीमाएं/वर्गीकरण मायने रखते हैं। एक विदेशी निवेशक FDI से जुड़े स्वामित्व या नियंत्रण की डिग्री प्राप्त किए बिना पोर्टफोलियो निवेश के रूप में प्रतिभूतियों का अधिग्रहण कर सकता है।
- **कथन 3 सही है:** FPI अधिक गतिशील (mobile) होता है क्योंकि पोर्टफोलियो निवेशक ब्याज दरों, विनिमय दर की उम्मीदों, वैश्विक जोखिम भूख और बाजार की स्थितियों में बदलाव के जवाब में वित्तीय संपत्तियों को अपेक्षाकृत जल्दी से पुनरआवंटित कर सकते हैं। FDI को आम तौर पर तुलनात्मक रूप से अधिक स्थिर माना जाता है क्योंकि इसमें लंबी अवधि की व्यावसायिक प्रतिबद्धताएं और भौतिक या प्रबंधकीय हित शामिल होते हैं।

4. भारत की संसद में प्रस्तावों (Motions) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक मूल प्रस्ताव (Substantive Motion) एक स्व-निहित प्रस्ताव होता है जो सामान्यतः किसी चिन्ता के विषय पर सदन के निर्णय या राय को व्यक्त करने में सक्षम होता है।
2. एक स्थानापन्न प्रस्ताव (Substitute Motion) विचारधीन मूल प्रस्ताव को एक वैकल्पिक प्रस्ताव से बदलने का प्रयास करता है।
3. एक संशोधन (Amendment) अनिवार्य रूप से एक स्वतंत्र मूल प्रस्ताव होता है और इसे केवल तभी लाया जा सकता है जब मूल प्रस्ताव को अंततः सदन द्वारा अपना लिया गया हो।
4. समापन प्रस्ताव (Closure Motion) का उद्देश्य किसी विषय पर बहस को समाप्त करना होता है ताकि प्रश्न को मतदान के लिए रखा जा सके।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

व्याख्या:

कथन 1, 2 और 4 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** एक मूल प्रस्ताव (Substantive Motion) एक स्वतंत्र प्रस्ताव है जिस पर सदन निर्णय ले सकता है। यह केवल किसी अन्य प्रस्ताव पर निर्भर नहीं होता है।
- **कथन 2 सही है:** एक स्थानापन्न प्रस्ताव (Substitute Motion) मूल प्रस्ताव के विकल्प का प्रस्ताव करता है। यदि इसे अपना लिया जाता है, तो यह मूल प्रस्ताव का स्थान ले लेता है।
- **कथन 3 गलत है:** संशोधन (Amendment) अनिवार्य रूप से एक स्वतंत्र मूल प्रस्ताव नहीं होता है। यह सामान्यतः विचारधीन प्रस्ताव या सुझाव के किसी हिस्से को संशोधित करने, जोड़ने, हटाने या अन्यथा बदलने के लिए लाया जाता है। इस पर मूल प्रस्ताव के संबंध में विचार किया जाना चाहिए और यह ऐसा नहीं है जिसे केवल मूल प्रस्ताव के अंतिम रूप से स्वीकृत होने के बाद ही लाया जाए।
- **कथन 4 सही है:** समापन प्रस्ताव (Closure Motion) सदन के समक्ष किसी मामले पर बहस को समाप्त करने और लागू संसदीय नियमों और अध्यक्ष/सभापति के अधिकार के अधीन प्रश्न को मतदान के लिए रखने में सक्षम बनाने के लिए बनाया गया है।

अवधारणात्मक जाल (Conceptual Trap)

UPSC संसदीय प्रस्तावों के मुख्य प्रस्ताव के साथ संबंधों को अलग करके उनका परीक्षण कर सकता है:

- मूल प्रस्ताव (Substantive motion) → स्वतंत्र प्रस्ताव
- स्थानापन्न प्रस्ताव (Substitute motion) → वैकल्पिक प्रस्ताव
- संशोधन (Amendment) → प्रस्ताव का संशोधन
- समापन प्रस्ताव (Closure) → बहस की समाप्ति

इस प्रकार, इन प्रस्तावों के बीच प्रक्रियात्मक संबंधों को समझे बिना केवल नामों को याद रखने से गलत उत्तर हो सकता है।

5. निम्नलिखित कथन (Assertion) और कारणों (Reasons) पर विचार कीजिए:

कथन (A): पर्याप्त लंबवत विकास (vertical development) वाले बादलों का संबंध अनिवार्य रूप से जमीन तक पहुंचने वाले वर्षण (precipitation) से नहीं होता है।

कारण (R1): किसी बादल के भीतर वर्षण का होना अनिवार्य रूप से यह नहीं दर्शाता है कि वर्षण वायुमंडल के माध्यम से नीचे गिरते हुए जीवित रहता है और पृथ्वी की सतह तक पहुंचता है।

कारण (R2): किसी बादल का मजबूत लंबवत विकास मुख्य रूप से वायुमंडलीय अस्थिरता और हवा की लंबवत गति के बजाय इसके क्षैतिज भौगोलिक विस्तार द्वारा निर्धारित होता है।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

- (a) R1 और R2 दोनों सही हैं, और दोनों कथन (A) की व्याख्या करते हैं
- (b) R1 और R2 दोनों सही हैं, लेकिन केवल R1 कथन (A) की व्याख्या करता है
- (c) R1 सही है, लेकिन R2 गलत है
- (d) R1 गलत है, लेकिन R2 सही है

उत्तर: (c)

व्याख्या:

कथन (A) सही है, और R1 सही है, जबकि R2 गलत है।

कथन (A) सही क्यों है?

काफी लंबवत विकास वाले बादल, जैसे कि कपासी वर्षी मेघ (cumulonimbus), में तेज ऊपर और नीचे की ओर हवा की गतियां होती हैं और वे महत्वपूर्ण वर्षा उत्पन्न कर सकते हैं। हालांकि, केवल लंबवत विकास की उपस्थिति यह

गारंटी नहीं देती है कि वर्षण जमीन तक पहुंचेगा। अपेक्षाकृत शुष्क हवा के माध्यम से नीचे गिरते समय जलकण (hydrometeors) वाष्पित हो सकते हैं, जिससे सतह पर वर्षा के बजाय विर्गा (virga) का निर्माण होता है।

- **R1सही है:** बादल के भीतर बने वर्षण को बादल के नीचे हवा के स्तंभ से गुजरना पड़ता है। यदि आसपास की हवा पर्याप्त रूप से शुष्क है या अन्य वायुमंडलीय स्थितियां जलकणों को सतह तक पहुंचने से रोकती हैं, तो वर्षण जमीन पर पहुंचने से पहले वाष्पित या अन्यथा समाप्त हो सकता है।
- **R2गलत है:** लंबवत विकास मौलिक रूप से क्षैतिज भौगोलिक विस्तार के बजाय लंबवत वायुमंडलीय गतियों, अस्थिरता, नमी और संवहन (convection) से जुड़ा हुआ है। कपासी रूप (cumuliform) के बादल लंबवत रूप से विकसित हो सकते हैं जब उठने वाली नम हवा सघनता से गुजरती है और अनुकूल वायुमंडलीय परिस्थितियों में उठना जारी रखती है।

इसलिए, प्रारंभिक परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण अंतर क्लाउड मॉर्फोलॉजी (cloud morphology) और सतह तक पहुंचने वाले वर्षण के बीच है। केवल एक बादल की उपस्थिति या लंबवत विस्तार यह स्थापित नहीं करता है कि जमीनी स्तर पर औसत दर्जे की वर्षा हो रही है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

1. रामनाथस्वामी मंदिर (रामेश्वरम) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह मंदिर मुख्य रूप से मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली की परंपरा से जुड़ा हुआ है, लेकिन इसका वर्तमान स्थापत्य परिसर किसी एक राजवंश का कार्य होने के बजाय विभिन्न कालखंडों में हुए परिवर्धन और संरक्षण का संघर्षी परिणाम है।
2. जिन विशाल स्तंभों वाले गलियारों (corridors) के लिए यह मंदिर विशेष रूप से प्रसिद्ध है, वे काफी हद तक नायक (Nayak) स्थापत्य शैली और रामनाथपुरम के सेतुपति शासकों के संरक्षण से जुड़े हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) न तो एक और न ही दो (d) एक और दो दोनों

उत्तर: (d) एक और दो दोनों

व्याख्या: दोनों कथन सही हैं।

- **कथन 1 सही है:** रामनाथस्वामी मंदिर द्रविड़ स्थापत्य परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी विशेषता विशाल गोपुरम, घिरे हुए प्राकार, मंडप और स्तंभों वाले विस्तृत गलियारे हैं। हालांकि, वर्तमान परिसर का निर्माण एक ही चरण में नहीं किया गया था। मंदिर को कई शताब्दियों में परिवर्धन और संरक्षण प्राप्त हुआ। तमिलनाडु

सरकार के जिला पोर्टल के अनुसार, 12वीं शताब्दी के बाद से शासक इसके निर्माण में शामिल थे, जिनमें सेतुपति शासकों ने इसके बाद के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाई।

- **कथन 2 सही है:** मंदिर के प्रसिद्ध लंबे स्तंभों वाले गलियारे एक मजबूत नायक स्थापत्य प्रभाव को दर्शाते हैं, जबकि रामनाथपुरम के सेतुपति शासक प्रमुख संरक्षक थे जो पर्याप्त परिवर्धन के लिए जिम्मेदार थे। ऐतिहासिक स्थापत्य विवरण विशेष रूप से प्रसिद्ध तीसरे प्राकार/गलियारे को नायक शैली और सेतुपति संरक्षण से जोड़ते हैं।

मुख्य UPSC जाल: यह पूछना कि "मंदिर का निर्माण किसने करवाया था?" मानो इसका कोई एक ही उत्तर हो, UPSC का एक बड़ा जाल है। ऐतिहासिक रूप से अधिक सटीक समझ यह है कि यह मंदिर बहु-स्तरीय/बहु-कालिक स्थापत्य परिसर है। सबसे शुरुआती चिनाई वाले निर्माण को ऐतिहासिक विवरणों में श्रीलंका के पराक्रम बाहु से भी जोड़ा जाता है, जिसके बाद के शासकों ने परिसर का काफी विस्तार किया।

इस प्रकार, पूरे मंदिर को विशेष रूप से केवल नायकों से या केवल सेतुपतियों से जोड़ना एक अत्यधिक सरलीकरण होगा।

2. भारत में आयोजित विश्व वृत्तीय अर्थव्यवस्था मंच (World Circular Economy Forum - WCEF) 2026 को मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किससे संबंधित एक अंतरराष्ट्रीय मंच के रूप में सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है?

- भारी उद्योगों से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी वैश्विक लक्ष्यों पर बातचीत करना
- रेखीय "लो-बनाओ-फेको" (take-make-dispose) आर्थिक मॉडल से संसाधन दक्षता, पुनः उपयोग, पुनर्प्राप्ति और वृत्तीय मूल्य श्रृंखलाओं की ओर परिवर्तन में तेजी लाना
- विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए एक वैश्विक कार्बन बाजार स्थापित करना
- बेसल कन्वेंशन के तहत खतरनाक कचरे में अंतरराष्ट्रीय व्यापार का समन्वय करना

उत्तर: (b)

व्याख्या: सही उत्तर (b) है।

विश्व वृत्तीय अर्थव्यवस्था मंच (WCEF) एक वैश्विक मंच है जो सर्कुलर इकोनॉमी (वृत्तीय अर्थव्यवस्था) की ओर परिवर्तन में तेजी लाने पर केंद्रित है, जिसमें संसाधन उपयोग, उत्पाद डिजाइन, उत्पादन और खपत को पुनर्गठित किया जाता है ताकि कचरे को न्यूनतम किया जा सके और सामग्रियों व उत्पादों को यथासंभव लंबे समय तक संचलन में रखा जा सके।

2026 का संस्करण 15-18 सितंबर 2026 तक गांधीनगर, गुजरात में आयोजित किया गया था, जो पहली बार दक्षिण एशिया में आयोजित किया गया। यह संयुक्त रूप से फिनिश इनोवेशन फंड सित्रा (Sitra) और भारत के केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) द्वारा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा गुजरात सरकार के सहयोग से आयोजित किया गया था।

इसका विषय था: "वृत्तीय अर्थव्यवस्था: लोगों और समृद्धि के लिए परिवर्तन।"

मंच ने निम्नलिखित क्षेत्रों को संबोधित किया:

- संसाधन दक्षता;
- कचरा न्यूनीकरण;
- टिकाऊ सामग्री प्रवाह;

- वृत्तीय आपूर्ति श्रृंखलाएं;
- सर्कुलरिटी के लिए वित्तपोषण;
- बिजनेस-मॉडल परिवर्तन;
- नवाचार और प्रौद्योगिकी;
- नीतिगत ढांचे।

अवधारणात्मक जाल यह है कि वृत्तीय अर्थव्यवस्था को केवल जलवायु नीति के बराबर मान लिया जाए। जलवायु शमन एक महत्वपूर्ण सह-लाभ हो सकता है, लेकिन वृत्तीय अर्थव्यवस्था व्यापक है। यह सामग्रियों और उत्पादों के पूरे जीवन चक्र से संबंधित है, जिसमें स्थायित्व, मरम्मत, पुनः उपयोग, नवीनीकरण और रीसाइक्लिंग के लिए उत्पादों को डिजाइन करना शामिल है।

न ही WCEF यूएनएफसीसीसी (UNFCCC) के तहत एक औपचारिक बातचीत सम्मेलन की तुलना में संधि बनाने वाला निकाय है। यह मुख्य रूप से एक वैश्विक ज्ञान, साझेदारी और समाधान मंच के रूप में कार्य करता है।

3. 2026में कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन (CSC) के तहत आयोजित टेबल टॉप एक्सरसाइज (TTX) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह अभ्यास विशाखापट्टनम में पूर्वी नौसेना कमान में आयोजित किया गया था और इसमें वास्तविक अभियान के लिए नौसेना संपत्तियों की तैनाती के बजाय सिम्युलेटेड परिदृश्य शामिल थे।
2. समुद्री आतंकवाद, नशीले पदार्थों की तस्करी, मानव तस्करी और अवैध, असूचित और अनियंत्रित मत्स्य पालन (IUU Fishing) पर इसका ध्यान गैर-पारंपरिक समुद्री-सुरक्षा चुनौतियों पर CSC के व्यापक जोर को दर्शाता है।
3. इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य हिंद महासागर में भाग लेने वाले बेड़ों की भौतिक तैनाती से जुड़ा एक सीधा बहुराष्ट्रीय नौसैनिक युद्ध अभ्यास आयोजित करना था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** CSC के तहत तीन दिवसीय टेबल टॉप अभ्यास 11 सितंबर 2026 को पूर्वी नौसेना कमान, विशाखापट्टनम में संपन्न हुआ। इसमें वास्तविक बेड़े की तैनाती के बजाय समन्वित प्रतिक्रियाओं का अभ्यास करने के लिए डिज़ाइन किए गए सिम्युलेटेड परिचालन परिदृश्य शामिल थे।
- **कथन 2 सही है:** इस अभ्यास में गैर-पारंपरिक समुद्री-सुरक्षा खतरों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिनमें शामिल हैं:
 - समुद्री आतंकवाद,
 - नशीले पदार्थों की तस्करी,
 - मानव तस्करी, और
 - अवैध, असूचित और अनियंत्रित (IUU) मत्स्य पालन। भाग लेने वालों ने मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस (MDA) को मजबूत करने के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं (SOPs) और सूचना-साझाकरण तंत्र की भी समीक्षा की।
- **कथन 3 गलत है:** टेबल टॉप एक्सरसाइज (Table Top Exercise) मूल रूप से एक सिम्युलेटेड निर्णय लेने और समन्वय करने का अभ्यास है। यह भाग लेने वाले अधिकारियों को लाइव परिचालन मिशन के लिए वास्तविक बलों को तैनात किए बिना प्रक्रियाओं, सूचना-साझाकरण तंत्रों और कमान प्रतिक्रियाओं का परीक्षण करने की अनुमति देता है।

इसलिए यह अंतर महत्वपूर्ण है: टेबल टॉप एक्सरसाइज → सिमुलेशन, समन्वय, निर्णय लेना और अभ्यास बनाम लाइव सैन्य अभ्यास → भौतिक तैनाती और परिचालन पैतरेबाजी (tactical manoeuvres)।

यह अभ्यास हिंद महासागर क्षेत्र में एक क्षेत्रीय समुद्री-सुरक्षा ढांचे 'कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन' (CSC) के तहत आयोजित किया गया था। इसलिए इसका ध्यान पारंपरिक समुद्री सुरक्षा के साथ-साथ गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों के बढ़ते महत्व को दर्शाता है।

4. सुबनसिरी नदी के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह ब्रह्मपुत्र की उत्तर-तट (north-bank) की एक प्रमुख सहायक नदी है।
2. इसका पार-सीमा (transboundary) चरित्र इसलिए है क्योंकि इसका ऊपरी मार्ग अरुणाचल प्रदेश से बहने और बाद में असम में प्रवेश करने से पहले तिब्बत में स्थित है।
3. नदी की अपेक्षाकृत तीव्र ढलान और आकस्मिक बाढ़ (flashy flood) की विशेषताएं आंशिक रूप से हिमालयी सहायक नदी प्रणाली की भू-आकृतिक और जलवायु परिस्थितियों से जुड़ी हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (c) सभी तीन

व्याख्या: तीनों कथन सही हैं।

- **कथन 1 सही है:** सुबनसिरी ब्रह्मपुत्र की प्रमुख उत्तर-तट की सहायक नदियों में से एक है। असम सरकार का ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली का विवरण विशेष रूप से सुबनसिरी को प्रमुख उत्तर-तट की सहायक नदियों में सूचीबद्ध करता है।
- **कथन 2 सही है:** नदी का एक पार-सीमा मार्ग है। इसका ऊपरी हिस्सा तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में है, जहां इसे चायुल चू (Chayul Chu) के नाम से जाना जाता है, जिसके बाद यह अरुणाचल प्रदेश से होकर बहती है और अंततः असम के मैदानों में प्रवेश करती है, जहां यह ब्रह्मपुत्र में मिल जाती है।
- **कथन 3 सही है:** ब्रह्मपुत्र की उत्तर-तट की सहायक नदियों में आमतौर पर तीव्र ढलान, मोटे अवसाद भार और आकस्मिक बाढ़ की विशेषताएं होती हैं। असम सरकार नोट करती है कि ऐसी सहायक नदियों में तीव्र ढलान, काफी हिस्सों में उथले लूपदार मार्ग (braided channels) और आम तौर पर आकस्मिक बाढ़ आती है।

सुबनसिरी का भूगोल विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके ऊपरी हिमालयी वर्ग में बहुत अधिक ऊंचाई का उतार-चढ़ाव (gradient) है। तकनीकी दस्तावेज दर्ज करते हैं कि नदी के असम के मैदानों तक पहुंचने से पहले इसके हिमालयी क्षेत्र में नदी के तल की ऊंचाई में उल्लेखनीय गिरावट आती है।

UPSC जाल: इनमें भ्रमित न हों:

- सुबनसिरी → ब्रह्मपुत्र की उत्तर-तट की सहायक नदी
- धनसिरी (दक्षिण) → दक्षिण-तट की सहायक नदी
- दिकरोंग और रंगा नदी → ब्रह्मपुत्र के इसी व्यापक जल निकासी तंत्र से जुड़ी सहायक नदियां

"पार-सीमा नदी" (transboundary river) वाक्यांश का अर्थ यह नहीं है कि पूरी नदी एक अंतरराष्ट्रीय सीमा बनाती है। इसका अर्थ है कि इसका जल निकासी क्षेत्र/मार्ग अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों में फैला हुआ है।

5. 2026 शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में अपनाई गई बिश्केक घोषणा के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसे SCO के राष्ट्राध्यक्षों की परिषद की 26वीं बैठक में अपनाया गया था और इसने संगठन की 25वीं वर्षगांठ को चिह्नित किया।
2. घोषणा ने SCO को नाटो (NATO) के तुलनीय सामूहिक-रक्षा दायित्वों वाले एक सैन्य गठबंधन के रूप में माना।
3. भारत ने SCO की आधिकारिक भाषा के रूप में अंग्रेजी को शामिल करने और SCO सभ्यता संवाद मंच के प्रस्ताव का समर्थन किया।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या: कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** 26वां SCO शिखर सम्मेलन 1 सितंबर 2026 को बिश्केक, किर्गिस्तान में आयोजित किया गया था, और शिखर सम्मेलन ने SCO के 25 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया। बिश्केक घोषणा को मुख्य संयुक्त परिणाम दस्तावेज के रूप में अपनाया गया था। SCO के आधिकारिक दस्तावेज़ डेटाबेस में 1 सितंबर 2026 की 25वीं वर्षगांठ की बिश्केक घोषणा दर्ज है।
- **कथन 2 गलत है:** SCO खुद को नाटो के समकक्ष सैन्य गठबंधन के रूप में परिभाषित नहीं करता है। बिश्केक घोषणा ने संप्रभु समानता, पारस्परिक सम्मान और सहयोग सहित सिद्धांतों पर आधारित एक बहुपक्षीय क्षेत्रीय संगठन के रूप में संगठन के चरित्र की पुष्टि की। समकालीन रिपोर्टिंग ने विशेष रूप से SCO की इस स्थिति को नोट किया कि यह एक सैन्य-राजनीतिक गुट नहीं है।
- **कथन 3 सही है:** भारत ने बिश्केक परिणामों में परिलक्षित कई पहलों का समर्थन किया, जिसमें एक आधिकारिक SCO भाषा के रूप में अंग्रेजी और प्रस्तावित SCO सभ्यता संवाद मंच (SCO Civilisation Dialogue Forum) शामिल है। भारत के प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि भारत 2026 में बाद में सभ्यता संवाद मंच के पहले संस्करण की मेजबानी करेगा।

महत्वपूर्ण अवधारणात्मक अंतर सुरक्षा सहयोग वाले एक क्षेत्रीय संगठन और एक औपचारिक सैन्य गठबंधन के बीच है। SCO सहयोग सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी, कनेक्टिविटी, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, संस्कृति और अन्य क्षेत्रों को कवर करता है, लेकिन यह स्वचालित रूप से इसे सामूहिक-रक्षा गठबंधन में परिवर्तित नहीं करता है।

6. निम्नलिखित भौगोलिक स्थानों पर विचार कीजिए:

1. पापीकोंडा राष्ट्रीय उद्यान — पूर्वी घाट
2. पापीकोंडा राष्ट्रीय उद्यान — गोदावरी नदी बेसिन
3. पापीकोंडा राष्ट्रीय उद्यान — आंध्र प्रदेश

निम्नलिखित संयोजनों में से कौन सा सही है? (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3 (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d) 1, 2 और 3

व्याख्या: तीनों संबंध/संयोजन सही हैं।

पापीकोंडा राष्ट्रीय उद्यान आंध्र प्रदेश में, मुख्य रूप से उत्तरी पूर्वी घाट में स्थित है। यह गोदावरी नदी से जुड़े क्षेत्रों में फैला हुआ है, और इसका परिदृश्य बीहड़ पहाड़ी इलाकों, नदी के क्षेत्रों, वनों और समृद्ध जैव विविधता से संपन्न है।

यह उद्यान लगभग 1,068वर्ग किमी को कवर करता है और मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीताराम राजू और एलुरु जिलों में स्थित है, जिसका व्यापक परिदृश्य पड़ोसी राज्य तेलंगाना की ओर भी फैला हुआ है।

मैपिंग ट्रेप विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि पापीकोंडा नाम अभ्यर्थियों को पूर्वी घाट के गोदावरी परिदृश्य के भीतर स्थित एक संरक्षित क्षेत्र के बजाय केवल एक पहाड़ी या जिले से जोड़ने के लिए प्रेरित कर सकता है।

इसलिए इसके भौगोलिक संबंधों को इस रूप में याद रखा जा सकता है: पूर्वी घाट → गोदावरी परिदृश्य → आंध्र प्रदेश → पापीकोंडा राष्ट्रीय उद्यान।

इस उद्यान को मूल रूप से 1978में वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया था और बाद में 2008में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया था।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS Paper I — कला एवं संस्कृति (Art & Culture)

प्रश्न 1. “बौद्ध धर्म ने प्राचीन भारत के धार्मिक परिदृश्य को न केवल अपने सिद्धांतों के माध्यम से, बल्कि नए संस्थागत रूपों, कलात्मक अभिव्यक्तियों और संरक्षण के पैटर्न के माध्यम से भी रूपांतरित किया।” परीक्षण कीजिए।

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

गंगा के मैदानों में गहन सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक परिवर्तनों के संदर्भ में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध धर्म का उदय हुआ। इसका महत्व बुद्ध की दार्शनिक शिक्षाओं से भी आगे तक फैला हुआ था। संघ, स्तूपों, चैत्यों, विहारों, तीर्थयात्रा नेटवर्क और कलात्मक संरक्षण के नए रूपों के माध्यम से, बौद्ध धर्म ने भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य के परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1. संस्थागत परिवर्तन (Institutional transformation)

संघ की स्थापना ने एक महत्वपूर्ण संस्थागत नवाचार का प्रतिनिधित्व किया। धार्मिक जीवन अब केवल गृहस्थों, अनुष्ठान विशेषज्ञों या एकांत तपस्वियों तक सीमित नहीं रहा। संगठित मठवासी समुदाय ने बौद्ध शिक्षाओं के लिए एक अपेक्षाकृत स्थायी संस्थागत ढांचा प्रदान किया।

संघ ने निम्नलिखित के लिए भी तंत्र बनाए:

- भिक्षुओं और भिक्षुणियों का प्रवेश और अनुशासन;
- शिक्षाओं का संरक्षण और प्रसार;
- क्षेत्रों के बीच भिक्षुओं की आवाजाही;
- मठवासी और गृहस्थ समुदायों के बीच बातचीत।

परिणामस्वरूप विहार न केवल एक निवास स्थान बन गया, बल्कि सीखने और बौद्धिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

2. धार्मिक प्रथाओं का परिवर्तन (Transformation of religious practice)

बौद्ध धर्म ने निम्नलिखित पर बल देकर जटिल बलि अनुष्ठानों की केंद्रीयता को चुनौती दी:

- नैतिक आचरण;
- आत्म-अनुशासन;
- मध्य मार्ग (Middle Path);
- कर्म;
- दुखों का निवारण;
- ज्ञान और अभ्यास के माध्यम से मुक्ति।

इसने धार्मिक गतिविधियों को बड़े पैमाने पर बलि अनुष्ठानों पर कम निर्भर बना दिया।

हालांकि, बौद्ध धर्म ने मौजूदा सामाजिक प्रथाओं को पूरी तरह से खारिज नहीं किया। समय के साथ, बौद्ध परंपराओं में भक्ति प्रथाओं, अवशेष पूजा (relic worship), पवित्र स्थलों और तेजी से जटिल होते अनुष्ठानों को शामिल किया गया।

3. वास्तुकला का परिवर्तन (Transformation of architecture)

बौद्ध धार्मिक आवश्यकताओं ने विशिष्ट स्थापत्य रूपों के विकास को प्रोत्साहित किया।

स्तूप अवशेषों और स्मरणोत्सव से जुड़े एक महत्वपूर्ण पवित्र स्मारक के रूप में विकसित हुआ। सांची और भरहुत जैसे स्थल स्तूप वास्तुकला और आख्यानत्मक मूर्तिकला परंपराओं के विकास को दर्शाते हैं।

चैत्य ने एक प्रार्थना भवन के रूप में कार्य किया, जबकि विहारों ने भिक्षुओं के लिए आवासीय स्थान प्रदान किए।

अजंता, कार्ला, भाजा और अन्य स्थलों पर शैलकृत वास्तुकला (rock-cut architecture) बौद्ध संस्थानों से जुड़ी तकनीकी और कलात्मक परिपक्वता को दर्शाती है।

4. दृश्य संस्कृति का परिवर्तन (Transformation of visual culture)

बौद्ध कला ने आख्यानत्मक प्रतिनिधित्व को एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन प्रदान किया।

जातक कथाओं को मूर्तिकला और चित्रकला परंपराओं में दर्शाया गया था, जिससे जटिल नैतिक आख्यानों को दृश्य रूप से संप्रेषित किया जा सका।

बौद्ध कला का विकास महत्वपूर्ण निरूपित परिवर्तनों से भी गुजरा। शुरुआती परंपराओं में बुद्ध का आह्वान करने के लिए अक्सर अमूर्त प्रतीकों, जैसे बोधि वृक्ष, खाली सिंहासन, पदचिह्न और चक्र का इस्तेमाल किया जाता था। बाद में, विशेष रूप से गांधार और मथुरा परंपराओं के तहत, बुद्ध के मानवशास्त्रीय (मानवीय रूप) निरूपण प्रमुख हो गए।

5. संरक्षण और सामाजिक नेटवर्क (Patronage and social networks)

बौद्ध संस्थानों को न केवल राजाओं द्वारा बल्कि व्यापारियों, श्रेणियों (guilds), कारीगरों और साधारण गृहस्थ भक्तों द्वारा भी समर्थन दिया गया था।

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि धार्मिक संरक्षण व्यापार नेटवर्क के विस्तार और शहरीकरण से जुड़ा हुआ था।

मठ अक्सर महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों के साथ उभरे, जिससे बौद्ध धर्म को निम्नलिखित के साथ जुड़ने का अवसर मिला:

- व्यापारी;
- यात्री;
- राजनीतिक अधिकारी;
- स्थानीय समुदाय।

समालोचनात्मक मूल्यांकन (Critical assessment)

यह परिवर्तन एकरेखीय नहीं था। बौद्ध धर्म स्वयं विभिन्न संप्रदायों में विविधतापूर्ण हो गया, और महायान जैसे बाद के विकासों ने तेजी से विस्तृत होती भक्ति और कलात्मक परंपराओं को प्रोत्साहित किया।

इसके अलावा, बौद्ध धर्म ने ब्राह्मणवादी, जैन और अन्य परंपराओं को केवल प्रतिस्थापित करने के बजाय उनके साथ सह-अस्तित्व बनाए रखा और अंतःक्रिया की।

निष्कर्ष (Conclusion)

इसलिए बौद्ध धर्म का ऐतिहासिक महत्व केवल एक नए दार्शनिक सिद्धांत के प्रसार में नहीं है। इसने मठों, तीर्थयात्रा, कलात्मक संरक्षण और ज्ञान प्रसार की एक नई संस्थागत पारिस्थितिकी का निर्माण किया, जिसने भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और बौद्धिक परंपराओं पर एक स्थायी छाप छोड़ी। इसका योगदान परिणामस्वरूप धार्मिक और सभ्यतागत दोनों था।

GS Paper II — अंतर्राष्ट्रीय संबंध (International Relations)

प्रश्न 2. “क्वाड (Quad) मुख्य रूप से एक रणनीतिक परामर्श तंत्र से इंडो-पैसिफिक में सार्वजनिक वस्तुएं (public goods) प्रदान करने वाले एक व्यापक मंच के रूप में विकसित हुआ है।” क्वाड में भारत के हितों पर चर्चा कीजिए और इसके संस्थागीकरण (institutionalisation) की सीमाओं का परीक्षण कीजिए।

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (Quad) भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका को एक साथ लाता है। इसका विकास इंडो-पैसिफिक के बढ़ते रणनीतिक महत्व और समुद्री सुरक्षा, लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं, महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों, स्वास्थ्य, जलवायु और बुनियादी ढांचे पर सहयोग की आवश्यकता को दर्शाता है।

क्वाड का विकास (Evolution of the Quad)

क्वाड की शुरुआत 2004 के हिंद महासागर सुनामी के बाद चारों देशों के बीच परामर्श से हुई थी, जिसके बाद 2007 में एक औपचारिक बैठक हुई।

निष्क्रियता की अवधि के बाद, इस तंत्र को 2017 में पुनर्जीवित किया गया और बाद में इसे नेताओं के स्तर तक उन्नत किया गया।

इसका एजेंडा पारंपरिक सुरक्षा से आगे बढ़कर उत्तरोत्तर विस्तारित हुआ है।

भारत के हित (India's interests)

1. समुद्री सुरक्षा (Maritime security)

भारत हिंद महासागर में एक भौगोलिक रूप से केंद्रीय स्थिति रखता है। क्वाड भागीदारों के साथ सहयोग निम्नलिखित को मजबूत कर सकता है:

- मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस (MDA);
- मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR);
- समुद्री निगरानी;
- समुद्री मार्गों की सुरक्षा;
- इंडो-पैसिफिक साझेदारों के बीच क्षमता निर्माण।

2. रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic autonomy)

क्वाड में भारत की भागीदारी का अर्थ स्वतः ही किसी औपचारिक सैन्य गठबंधन की सदस्यता नहीं है।

यह भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए प्रमुख शक्तियों के साथ सहयोग करने की अनुमति देता है।

3. महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियां (Critical and emerging technologies)

क्वाड निम्नलिखित क्षेत्रों में सहयोग के लिए एक मंच प्रदान करता है:

- दूरसंचार;
- सेमीकंडक्टर;
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI);
- क्वांटम प्रौद्योगिकियां;
- साइबर सुरक्षा;
- अंतरिक्ष।

ऐसा सहयोग भारत की तकनीकी और विनिर्माण आकांक्षाओं का समर्थन कर सकता है।

4. आपूर्ति-श्रृंखला लचीलापन (Supply-chain resilience)

कोविड-19के अनुभव ने विश्व स्तर पर केंद्रित आपूर्ति श्रृंखलाओं में कमजोरियों को प्रदर्शित किया।

भारत फार्मास्यूटिकल्स, महत्वपूर्ण खनिजों और उन्नत प्रौद्योगिकियों जैसे क्षेत्रों में उत्पादन नेटवर्क में विविधता लाने और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने के लिए क्वाड सहयोग का उपयोग कर सकता है।

5. बुनियादी ढांचा और कनेक्टिविटी (Infrastructure and connectivity)

क्वाड इंडो-पैसिफिक में पारदर्शी, टिकाऊ और आर्थिक रूप से व्यवहार्य बुनियादी ढांचे के विकल्पों का समर्थन कर सकता है।

क्वाड एक औपचारिक गठबंधन क्यों नहीं बना है? (Why has the Quad not become a formal alliance?)

- **पहला, भिन्न रणनीतिक प्राथमिकताएं:** चारों देश हर क्षेत्रीय खतरे को एक समान रूप से नहीं देखते हैं।
- **दूसरा, भारत की रणनीतिक स्वायत्तता:** भारत ने पारंपरिक रूप से कठोर सैन्य गठबंधनों से परहेज किया है और रूस, ईरान, आसियान राज्यों और अन्य साझेदारों के साथ महत्वपूर्ण संबंध बनाए रखे हैं।
- **तीसरा, आसियान की संवेदनशीलता:** अत्यधिक गठबंधन-उन्मुख क्वाड गुटबाजी की राजनीति के संबंध में दक्षिण-पूर्व एशियाई राज्यों के बीच चिंताएं पैदा कर सकता है।
- **चौथा, संस्थागत लचीलापन:** क्वाड की अपेक्षाकृत लचीली संरचना सदस्यों को संधि के दायित्वों से बंधे बिना विभिन्न मुद्दों पर सहयोग करने की अनुमति देती है।

क्वाड बनाम सैन्य गठबंधन (Quad versus military alliance)

एक महत्वपूर्ण अंतर बनाए रखा जाना चाहिए:

विशेषता	क्वाड (Quad)	औपचारिक सैन्य गठबंधन (Formal military alliance)
प्रकृति	कूटनीतिक और रणनीतिक समूह	संधि-आधारित सुरक्षा प्रतिबद्धता
रक्षा खंड	कोई सामूहिक-रक्षा खंड नहीं	आमतौर पर सामूहिक-रक्षा दायित्व
एजेंडा	लचीला एजेंडा	औपचारिक दायित्व
निर्णय प्रक्रिया	सहमति-आधारित सहयोग	संधि-परिभाषित प्रतिबद्धताएं

आगे का रास्ता (Way Forward)

भारत निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करके क्वाड की उपयोगिता को अधिकतम कर सकता है:

- मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस;
- आपदा राहत;
- लचीली आपूर्ति श्रृंखलाएं;
- महत्वपूर्ण खनिज;
- प्रौद्योगिकी मानक;
- साइबर सुरक्षा;
- स्वास्थ्य सुरक्षा;

- बुनियादी ढांचा;
- जलवायु लचीलापन।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत के लिए, क्राड पारंपरिक गठबंधन के बजाय मुद्दे-आधारित रणनीतिक सहयोग के एक उपकरण का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी प्रभावशीलता संस्थागत विस्तार पर कम और भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और आसियान केंद्रीयता को संरक्षित करते हुए रणनीतिक अभिसरण (strategic convergence) को मूर्त सार्वजनिक वस्तुओं में बदलने की इसकी क्षमता पर अधिक निर्भर करेगी।

GS Paper III — अर्थव्यवस्था (Economy)

प्रश्न 3. “मौद्रिक नीति का संचरण (Monetary policy transmission) यह निर्धारित करता है कि नीतिगत दर में बदलाव वास्तव में मुद्रास्फीति और आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करते हैं या नहीं।” भारत में मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मौद्रिक नीति समिति (MPC) की भूमिका की व्याख्या कीजिए। मौद्रिक सख्ती (monetary tightening) से आर्थिक लागत भी क्यों उत्पन्न हो सकती है?

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

मुद्रास्फीति का तात्पर्य सामान्य मूल्य स्तर में निरंतर वृद्धि से है, जिससे धन की क्रय शक्ति कम हो जाती है। भारत में, मौद्रिक नीति मुख्य रूप से नीतिगत ब्याज दर और संबद्ध तरलता व संचरण तंत्र के माध्यम से मुद्रास्फीति और समष्टि आर्थिक स्थितियों को प्रभावित करने का प्रयास करती है।

मौद्रिक नीति समिति (MPC) विकास को ध्यान में रखते हुए मुद्रास्फीति लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत दर निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार वैधानिक निकाय है।

मौद्रिक नीति समिति (MPC) की भूमिका

भारत के मुद्रास्फीति-लक्षित ढांचे के तहत, MPC विकास को ध्यान में रखते हुए मूल्य स्थिरता बनाए रखने के उद्देश्य से नीतिगत दर, मुख्य रूप से रेपो दर, निर्धारित करती है।

यह तंत्र कई चरणों के माध्यम से काम करता है:

1. नीतिगत दर → बाजार ब्याज दरें: जब RBI रेपो दर बढ़ाता है, तो बैंकों के लिए उधार लेने की लागत बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप बैंक उधार दरों में वृद्धि कर सकते हैं।

2. ब्याज दरें → उपभोग और निवेश: उच्च उधारी लागत निम्नलिखित को कम कर सकती है:

- उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की मांग;
- आवास निवेश;
- कॉर्पोरेट उधारी;
- निजी पूंजीगत व्यय।

यह समग्र मांग (aggregate demand) को कम करता है।

3. मांग → मुद्रास्फीति: जब समग्र मांग उत्पादक क्षमता की तुलना में कम अत्यधिक हो जाती है, तो मांग-पक्षीय मुद्रास्फीति का दबाव कम हो सकता है।

4. प्रत्याशा चैनल (Expectations channel): मौद्रिक नीति मुद्रास्फीति की प्रत्याशाओं को भी प्रभावित करती है। यदि परिवारों और व्यवसायों का मानना है कि केंद्रीय बैंक मूल्य स्थिरता के लिए प्रतिबद्ध है, तो मजदूरी और मूल्य-निर्धारण व्यवहार अधिक संयमित हो सकता है।

5. विनिमय-दर चैनल (Exchange-rate channel): उच्च घरेलू ब्याज दरें पूंजी प्रवाह और विनिमय-दर स्थितियों को प्रभावित कर सकती हैं। एक अपेक्षाकृत मजबूत मुद्रा आयातित वस्तुओं की घरेलू लागत को कम कर सकती है, हालांकि यह संबंध न तो स्वचालित है और न ही एकसमान है।

मौद्रिक नीति तुरंत मुद्रास्फीति को नियंत्रित क्यों नहीं कर सकती

एक बड़ी सीमा यह है कि सभी मुद्रास्फीति अत्यधिक मांग के कारण नहीं होती है। भारत निम्नलिखित से उत्पन्न होने वाली आपूर्ति-पक्षीय मुद्रास्फीति का अनुभव कर सकता है:

- खाद्यान्न की कमी;
- मौसम के झटके;
- अंतर्राष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतें;
- आपूर्ति-श्रृंखला में व्यवधान;
- भू-राजनीतिक घटनाएं;
- कमोडिटी की कीमतों में वृद्धि।

एक उच्च नीतिगत दर सीधे तौर पर अधिक सब्जियां, कच्चा तेल या बारिश का उत्पादन नहीं कर सकती है।

मौद्रिक सख्ती की लागत (Costs of monetary tightening)

मौद्रिक सख्ती के महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव हो सकते हैं:

- 1. निवेश में मंदी:** उच्च ब्याज दरें निजी निवेश को हतोत्साहित कर सकती हैं।
- 2. रोजगार पर प्रभाव:** कम निवेश और उपभोग से रोजगार सृजन कमजोर हो सकता है।
- 3. राजकोषीय लागत:** जब बाजार की पैदावार (yields) बढ़ती है तो उच्च उधारी लागत सरकार के ब्याज बोझ को बढ़ा सकती है।
- 4. वित्तीय तनाव:** अत्यधिक कर्ज में डूबी फर्मों और परिवारों को अधिक पुनर्भुगतान बोझ का सामना करना पड़ सकता है।
- 5. विकास-मुद्रास्फीति ट्रेड-ऑफ:** आक्रामक सख्ती मुद्रास्फीति को कम कर सकती है लेकिन साथ ही आर्थिक विकास को कमजोर कर सकती है।

संचरण (Transmission) क्यों महत्वपूर्ण है

नीतिगत दर स्वयं अंतिम आर्थिक चर नहीं है।

यह श्रृंखला इस प्रकार है:

MPC का निर्णय → वित्तीय-बाजार दरें → बैंक उधार/जमा दरें → साख/ऋण → उपभोग/निवेश → समग्र मांग → मुद्रास्फीति

इस श्रृंखला की प्रभावशीलता बैंकिंग-प्रणाली की तरलता, प्रतिस्पर्धा, प्रत्याशाओं, वित्तीय परिस्थितियों और मुद्रास्फीति के झटके की प्रकृति पर निर्भर करती है।

आगे का रास्ता (Way Forward)

इसलिए मुद्रास्फीति प्रबंधन के लिए निम्नलिखित के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है:

- मौद्रिक नीति;
- खाद्य-आपूर्ति प्रबंधन;
- कृषि नीति;
- रसद (logistics);
- व्यापार नीति;
- राजकोषीय नीति;
- ऊर्जा नीति।

निष्कर्ष (Conclusion)

समष्टि आर्थिक विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए MPC आवश्यक है, लेकिन मौद्रिक नीति स्वतंत्र रूप से हर मुद्रास्फीति के झटके का समाधान नहीं कर सकती है। प्रभावी मुद्रास्फीति नियंत्रण के लिए आपूर्ति-पक्ष के सुधारों और राजकोषीय विवेक के साथ संयुक्त विश्वसनीय मौद्रिक नीति की आवश्यकता होती है। इसलिए उद्देश्य केवल उच्च ब्याज दरों के माध्यम से मुद्रास्फीति को दबाना नहीं होना चाहिए, बल्कि उत्पादक आर्थिक गतिविधि में न्यूनतम व्यवधान के साथ टिकाऊ मूल्य स्थिरता प्राप्त करना होना चाहिए।

GS Paper IV — नीतिशास्त्र (Ethics)

प्रश्न 4. “एक नैतिक प्रशासक को अन्यायपूर्ण आदेश और अकुशल परंपरा दोनों पर सवाल उठाने में सक्षम होना चाहिए।” सत्यनिष्ठा, अंतरात्मा, जवाबदेही और सार्वजनिक हित के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

लोक प्रशासन में नागरिकों की ओर से प्राधिकरण का प्रयोग शामिल है। इसलिए एक सिविल सेवक को ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जहां कानूनी अनुपालन, प्रशासनिक परंपरा और नैतिक जिम्मेदारी हमेशा एक ही दिशा में इशारा नहीं कर सकते हैं।

एक नैतिक प्रशासक को आज्ञाकारिता से अधिक की आवश्यकता होती है। उसे सत्यनिष्ठा, नैतिक साहस, संवैधानिक मूल्यों, सहानुभूति और जवाबदेही की आवश्यकता होती है।

सत्यनिष्ठा (Integrity)

सत्यनिष्ठा का अर्थ किसी व्यक्ति के मूल्यों, निर्णयों और आचरण के बीच निरंतरता है।

सत्यनिष्ठा वाला प्रशासक:

- व्यक्तिगत लाभ के लिए नियमों में हेरफेर नहीं करता है;
- भ्रष्टाचार का विरोध करता है;
- हितों के टकराव का खुलासा करता है;
- सार्वजनिक संसाधनों को एक सार्वजनिक विश्वास के रूप में मानता है।

इसलिए सत्यनिष्ठा ईमानदारी से कहीं अधिक है। इसके लिए नैतिक निरंतरता की आवश्यकता होती है, भले ही दुराचार का पता न चले।

अंतरात्मा (Conscience)

अंतरात्मा सही और गलत की व्यक्ति की आंतरिक नैतिक जागरूकता का प्रतिनिधित्व करती है।

मान लीजिए कि एक अधिकारी को अनौपचारिक राजनीतिक निर्देश के कारण किसी वैध नागरिक के अधिकार को खारिज करने का निर्देश दिया गया है। अंधी आज्ञाकारिता निम्नलिखित के साथ संघर्ष करेगी:

- संवैधानिक सिद्धांत;
- कानून का शासन;
- निष्पक्षता;
- जनहित।

इसलिए अंतरात्मा एक आंतरिक नैतिक जांच के रूप में कार्य कर सकती है।

हालांकि, व्यक्तिगत अंतरात्मा मनमाने व्यवहार का औचित्य नहीं बन सकती। लोक प्रशासन में अंतरात्मा को कानून, संवैधानिक नैतिकता और संस्थागत जवाबदेही के ढांचे के भीतर काम करना चाहिए।

जवाबदेही (Accountability)

एक अधिकारी को निर्णयों का औचित्य साबित करने में सक्षम होना चाहिए।

इसका अर्थ निम्नलिखित के बीच अंतर करना है:

“मुझे ऐसा करने का निर्देश दिया गया था”

तथा

“मैं उस निर्णय के लिए संस्थागत रूप से जिम्मेदार हूँ जिसे मैंने लागू किया है।”

इसलिए जवाबदेही प्रशासनिक जिम्मेदारी को पदानुक्रमित संरचनाओं में गायब होने से रोकती है।

नैतिक साहस (Moral courage)

नैतिक साहस विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण होता है जब एक प्रशासक का सामना निम्नलिखित से होता है:

- भ्रष्टाचार;
- भेदभाव;

- सार्वजनिक संसाधनों का दुरुपयोग;
- वैध जानकारी को दबाना;
- गैर-कानूनी आदेश।

अधिकारी को असहमति दर्ज करने, लिखित निर्देश मांगने, संस्थागत शिकायत निवारण तंत्र का उपयोग करने या मामले को सक्षम अधिकारियों के समक्ष ले जाने की आवश्यकता हो सकती है।

जनहित (Public interest)

प्रशासन का अंतिम उद्देश्य व्यक्तिगत सुविधा या संस्थागत प्रतिष्ठा नहीं बल्कि संवैधानिक ढांचे के भीतर जन कल्याण है।

अधिकारों का उल्लंघन करने वाले एक कुशल निर्णय को स्वतः ही नैतिक नहीं माना जा सकता।

इसी तरह, स्थापित कानूनी सुरक्षा उपायों का उल्लंघन करने वाला एक करुणामय निर्णय भी मनमानापन पैदा कर सकता है।

इसलिए नैतिक प्रशासन के लिए निम्नलिखित के संतुलन की आवश्यकता होती है:

वैधता + निष्पक्षता + दक्षता + करुणा + जवाबदेही

अकुशल परंपराओं पर सवाल उठाना (Questioning inefficient conventions)

प्रशासनिक प्रथाएं केवल इसलिए बनी रह सकती हैं क्योंकि "यह हमेशा से ऐसे ही किया जाता रहा है।"

एक नैतिक प्रशासक को पूछना चाहिए:

- क्या प्रक्रिया नागरिकों की सेवा करती है?
- क्या यह अनावश्यक देरी पैदा करती है?
- क्या तकनीक इसे सरल बना सकती है?
- क्या यह संवेदनशील/वंचित समूहों पर असंगत रूप से बोझ डालती है?

यह वह स्थान है जहां नैतिक नवाचार महत्वपूर्ण हो जाता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

आदर्श प्रशासक न तो नियमों का अंधाधुंध पालन करने वाला होता है और न ही केवल व्यक्तिगत नैतिकता से संचालित व्यक्ति। नैतिक सिविल सेवक वह है जिसके पास अन्याय पर सवाल उठाने का साहस, अकुशल परंपराओं पर सवाल उठाने की विनम्रता और कानूनी, पारदर्शी और जवाबदेह संस्थागत तंत्र के माध्यम से सुधार करने का अनुशासन है।

समसामयिकी (Current Affairs) — GS Paper III

प्रश्न 5. "ग्रास माचे" (Grass Mache) तकनीक यह दर्शाती है कि कैसे पर्यावरणीय कचरा आजीविका और सांस्कृतिक नवाचार का स्रोत बन सकता है। सर्कुलर इकोनॉमी, आर्द्रभूमि (wetland) संरक्षण और समावेशी हरित उद्यमिता के एक मॉडल के रूप में इसके महत्व का परीक्षण कीजिए।

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

श्रीनगर के एक कारीगर द्वारा विकसित ग्रास माचे (Grass Mache) तकनीक, दल झील से हटाई गई जलकुंभी/जल खरपतवारों और घास का उपयोग हस्तशिल्प के लिए कच्चे माल के रूप में करती है। यह तकनीक कश्मीर की पारंपरिक पेपर-माचे (papier-mâché) कला से जुड़े सिद्धांतों को अपनाती है और जैविक कचरे को सजावटी व उपयोगिता वाले उत्पादों में परिवर्तित करती है।

1. कचरे से संसाधन तक (From waste to resource)

पारंपरिक रेखीय आर्थिक मॉडल मोटे तौर पर निम्नलिखित का पालन करता है:

निष्कर्षण (Extract) → उत्पादन (Produce) → उपभोग (Consume) → निपटान (Dispose)

ग्रास माचे दृष्टिकोण एक वृत्तीय (circular) विकल्प पेश करता है:

अपशिष्ट बायोमास → प्रसंस्करण → उत्पाद → आर्थिक मूल्य

जलीय खरपतवार जो अन्यथा कचरा बन जाते हैं, उन्हें एकत्र, सुखाया और रेशेदार सामग्री में संसाधित किया जाता है। इस सामग्री को फिर निम्नलिखित उत्पादों में ढाला जा सकता है:

- फूलदान;
- लटकने वाले सजावटी सामान;
- आभूषण;
- गृह सज्जा उत्पाद।

इस तकनीक ने अग्निरोधक स्विचबोर्ड और पैनेलिंग जैसे अनुप्रयोगों की संभावनाओं की भी खोज की है।

2. आर्द्रभूमि संरक्षण के साथ संबंध (Link with wetland conservation)

दल झील को अत्यधिक जलीय वनस्पति सहित कई पारिस्थितिक दबावों का सामना करना पड़ता है।

अवांछित जलीय खरपतवारों को हटाना झील-प्रबंधन गतिविधियों का हिस्सा बन सकता है। हालांकि, पारिस्थितिक उद्देश्य को केवल हर जलीय पौधे को हटाने तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

आर्द्रभूमि वनस्पति वैध पारिस्थितिक कार्य कर सकती है, जिनमें शामिल हैं:

- आवास प्रावधान;
- पोषक तत्व चक्रण;
- पारिस्थितिक प्रक्रियाओं का स्थिरीकरण।

इसलिए, टिकाऊ कटाई/निकासी वैज्ञानिक मूल्यांकन पर आधारित होनी चाहिए कि किस बायोमास को और किस पैमाने पर हटाया जाना चाहिए।

यह निम्नलिखित के बीच एक महत्वपूर्ण नीतिगत अंतर है:

पारिस्थितिक प्रबंधन (ecological management) बनाम बायोमास का व्यावसायिक निष्कर्षण (commercial extraction of biomass)

3. सर्कुलर इकोनॉमी आयाम (Circular economy dimension)

ग्रास माचे मॉडल कई वृत्तीय-अर्थव्यवस्था सिद्धांतों को मूर्त रूप देता है:

- कचरे का न्यूनीकरण;
- संसाधन पुनर्प्राप्ति;
- सामग्री प्रतिस्थापन;
- स्थानीय उत्पादन;
- मूल्य संवर्धन;
- जैविक संसाधनों का पुनः उपयोग।

अपशिष्ट बायोमास और पुनर्चक्रित कागज का उपयोग वर्जिन प्लांट या लकड़ी-आधारित सामग्रियों पर निर्भरता को संभावित रूप से कम कर सकता है।

4. आजीविका का आयाम (Livelihood dimension)

यह मॉडल पर्यावरण संरक्षण को हरित आजीविका से भी जोड़ता है।

यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि संरक्षण पहल कभी-कभी प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर समुदायों पर लागत थोपती है।

कचरे से धन (waste-to-wealth) का दृष्टिकोण संरक्षण को एक कथित प्रतिबंध से एक आर्थिक अवसर में संभावित रूप से परिवर्तित कर सकता है।

यह तकनीक निम्नलिखित के लिए संभावनाएं पैदा करती है:

- स्थानीय उद्यमिता;
- कारीगरों की आजीविका;
- महिलाओं का रोजगार;
- कौशल विकास;
- सामुदायिक भागीदारी।

समसामयिक स्रोत विशेष रूप से एक महिला-नेतृत्व वाले आजीविका मॉडल के रूप में इसकी क्षमता की पहचान करता है, जो महिलाओं और लड़कियों को टिकाऊ हस्तशिल्प में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है।

5. सांस्कृतिक स्थिरता (Cultural sustainability)

यह तकनीक केवल एक नए हस्तशिल्प का प्रतिनिधित्व नहीं करती है।

यह कश्मीरी पेपर-माचे के ज्ञान और कौशल को एक नए कच्चे माल में ढालती है।

यह निम्नलिखित के बीच एक महत्वपूर्ण प्रतिच्छेदन (intersection) बनाती है:

पारंपरिक ज्ञान + नवाचार + पर्यावरणीय स्थिरता

ऐसा अनुकूलन पारंपरिक शिल्पों को बदलते बाजारों में आर्थिक रूप से प्रासंगिक बनाए रखने में मदद कर सकता है।

चुनौतियाँ (Challenges)

यह मॉडल फिर भी सीमाओं का सामना करता है:

- **बाजार मापनीयता (Market scalability):** विशिष्ट (niche) हस्तशिल्प की सीमित मांग हो सकती है।
- **गुणवत्ता मानकीकरण (Quality standardisation):** प्राकृतिक बायोमास संरचना और स्थायित्व में भिन्न हो सकता है।
- **कच्चे माल की रसद (Raw-material logistics):** संग्रह, सुखाने और प्रसंस्करण के लिए संगठित प्रणालियों की आवश्यकता होती है।
- **पारिस्थितिक सुरक्षा उपाय (Ecological safeguards):** व्यावसायिक मांग को अंधाधुंध हटाने या कटाई के लिए प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए।
- **बौद्धिक संपदा और लाभ-साझाकरण (Intellectual property and benefit-sharing):** पारंपरिक ज्ञान और स्थानीय समुदायों को उचित मान्यता की आवश्यकता है।

आगे का रास्ता (Way Forward)

इस मॉडल को निम्नलिखित के माध्यम से मजबूत किया जा सकता है:

1. वैज्ञानिक बायोमास मूल्यांकन;
2. समुदाय-आधारित झील प्रबंधन;
3. कारीगर सहकारी समितियां और FPO-जैसी संरचनाएं;
4. डिजाइन और पैकेजिंग सहायता;
5. ई-कॉमर्स पहुंच;
6. ग्रीन सर्टिफिकेशन;
7. कौशल-विकास कार्यक्रम;
8. संस्थागत खरीद;
9. टिकाऊ और अग्निरোধक सामग्री में अनुसंधान;
10. आर्द्रभूमि पुनरुद्धार कार्यक्रमों के साथ एकीकरण।

निष्कर्ष (Conclusion)

ग्रास माचे तकनीक यह साबित करती है कि पर्यावरण संरक्षण को आर्थिक विकास से अलग करने की आवश्यकता नहीं है। इसका गहरा महत्व पारिस्थितिक पुनरुद्धार, पारंपरिक ज्ञान, उद्यमिता और आजीविका के बीच एक बंद-लूप (closed-loop) संबंध बनाने में निहित है।

हालांकि, इसके प्रतिकृति (replication) को इस सिद्धांत का पालन करना चाहिए:

“संरक्षण पहले, पारिस्थितिक सीमाओं के भीतर व्यवसायीकरण।”

यदि वैज्ञानिक संसाधन मूल्यांकन, सामुदायिक भागीदारी और व्यावहारिक बाजारों का समर्थन प्राप्त हो, तो ऐसे मॉडल सांस्कृतिक ज्ञान को संरक्षित करते हुए पर्यावरणीय चुनौतियों को समावेशी हरित आर्थिक अवसरों में परिवर्तित कर सकते हैं। - कश्मीरी कारीगर दल झील के खरपतवारों को हस्तशिल्प में बदल रहे हैं

यह वीडियो दिखाता है कि कैसे श्रीनगर की कारीगर सिमरन इरशाद दल झील से निकाले गए खरपतवार और कचरे का उपयोग करके "ग्रास माचे" तकनीक के माध्यम से हस्तशिल्प उत्पाद तैयार कर रही हैं, जो सीधे प्रश्न 5 के समसामयिकी विषय से संबंधित है।

